एड्स

फैलने के कारणों में चुम्बन भी

लेखक-डॉ. मनोहर लाल भंडारी

सरकार इस बात को प्रचारित नहीं करने का कारण कंडोम कंपनीयों को फायदा पहुचाना तो नहीं ?

नाको ने ट्रेनिंग माड्यूल फॉर मेडिकल आफिसर में साफ साफ लिखा कि त्वचा यदि सलामत रहे तो वह एच.आई.वी. संक्रमण की दृष्टि से विश्वसनीय बाधक है परंतु म्युकस मेम्ब्रन यदि सलामत भी हो तो वह विश्वसनीय बाधक नहीं है (Reliable Barrier) यहाँ यह बताना मुनासिब होगा कि हमारे मुँह आँख, नाक, योनि, गुदा, शिष्ण आदि की अंदरूनी सतह को म्युकस मेम्ब्रेन कहते है हमारे मुँह के छाले इसी म्युकस मेम्ब्रन में हुए छोटे बड़े छिद्र होते है नाको ने स्पष्ट लिखा है कि शरीर द्रव दुसरे व्यक्ति के रक्त और म्युकस मेम्ब्रेन में आता है तो संक्रमण संभव है इसका अर्थ यह हुआ कि गीला चुम्बन या प्रगाढ चुम्बर संक्रमण कर सकता है स्मरण रहे कि नारो के मुताबिक रक्त, वीर्य, योनिद्रव और गुदा में वायरस अधिक संख्या में होते है परन्तु लार, पसीने व आँसू में कम संख्या में होते है

इन्दौर :एच.आई.वी. या एड्स एक असाध्य, कष्टकारी और संक्रामक रोग है. एक बार इसकी गिरफ्त में आने के बाद रोगी की मौत सुनिश्चित होती हैं, क्योंकि जीवन के हर कदम पर उपेक्षा, तिरस्कार, अपमान और घृणा से उसे दो-दो हाथ करना पड़ता है. परिवार के लोग ही उस घर से निकाल देते हैं. अस्पतालों में हर तरफ से उपेक्षा, स्कूलों से निकाला जाना यहां तक कि जिन्दा दफनाने के प्रकरण भी पढने सुनने को मिलते है.

सन् १९८६-८७ में इस रोग ने भारत में पहला कदम रखा था और सन् २००६ के अंत तक लगभग ५७ लाख एच.आई.वी./एड्स के रोगी होने की बात बताई गई थी. अनेक वर्षो से नेशनल एड्स कन्ट्रोल आर्गेनाईजेशन इस रोग के विस्तार को रोकने के लिये प्रयास कर रहा है. अब तक कई हजार करोड़ रूपए बचान के उपाय में इस संगठन द्वारा खर्च कर डाले है.

वैज्ञानिकों के मुताबिक इसके विषाणु (वायरस) रोगी के शरीर में सभी द्रवों-रक्त,वीर्य, योनिद्रव, लार, पसीने और आँसू आदि में पाये जाते है. इसके वायरस का आकार १०० नैनोमीटर होता है, जिसका अर्थ है कि एक सेन्टीमीटर (आधा इंच से भी कम जगह) में इसके १० लाख वायरस समा सकते हैं. अर्थात इसके प्रवेश के लिये सूक्ष्मतम छिद्र भी काफी होता है. सुई की नोक बराबर छिद्र के जरिए हजारों की संख्या में वायरस एक साथ प्रवेश कर सकते है.

मुँह में इन कारणों से होती है वायरस की पूरी संभावना- यह सच है कि कुपोषण से भारत की लगभग आधी जनसंख्या पीडित है. कुपोषण के अंतर्गत विटामिन बी ग्रुप और सी की कमी के कारण मुँह में छाले और मसूड़ों में सूजन होने की संभावना सर्वाधिक रहती है. दाँतों में सड़न की समस्या भी भारत में बहुतायात में है. इण्डियन डेंटल एसोसिएशन और कालगेट कंपनी के मुताबिक देश के हर दूसरे व्यक्ति के दाँतों में सड़न की शिकायत है. गले मे खराश, टांसिलाइटिस, जुकाम जैसी बीमारीयाँ समस्या भी भारत में काफी आम है. तेज मसाले दार खाना, चाट-पकोड़े, समोसे-कचोरी जैसेतीखे आयटम खाने के शौकीन भी हमारे देश में कुछ ज्यादा ही हैं. चूने-कत्थे का पान, तमाकू, गुटका, पान मसाला, पान बहार, सुपारी बीड़ी-सिगरेट, शराब का सेवन तथा गरम चाय-काफी भी हमारे देश के लोग खाते-पीते हैं. इन सबसे मुँह की झिल्ली (म्यूकस मेम्ब्रेन) सूक्ष्म और स्थूल रूप से क्षतिग्रस्त होती है.

मुँह से फैलता है एड्स

टेक्सास (यू.एस.ए.) के डॉ मार्क निकालस के अनुसार एच.आई.वी./एड्स के संक्रमण के प्राथमिक लक्षण बहुधा मुँह में ही प्रकट होते है. यही वजह है कि दंत-चिकित्साकों को इस मामले में सदैव सजग रहने को कहा जाता है और उसके उपकरणों को स्टरलाईज (कीटाणु विहीनीकरण) करने के लिए विषेष ध्यान रखा जाता है. अमेरिका में रोगी की लार से एच.आई.वी. की उपस्थिति देखने का चलन है, जिसे यूनाइटेड स्टेट्स फूड्स एण्ड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन ने प्रामाणिकता प्रदान की है. डेनियल क्यू हेनी के मुताबिक कापोसी सारकोमा नामक कैंसर जो कि एड्स रिलेटेड वाईरस से होता हैं, यह चुम्बन से फैलता है. उन्होंने लिखा है कि - *एड्स रिलेटेड वायरस स्प्रेड्स थ्रु कीसिंग* डॉ. जॉन पॉक के अध्ययन के अनुसार समलैंगिक रोगियों की लार में गुदा और यौनांगों की तुलना में ३० प्रतिशत अधिक रोगाणु पाए गए.

भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद के तत्कालीन महानिदेशक डॉ. अवतारसिंह पेंटल ने इंडिया टुडे (३१ जुलाई १९८८)को दिये गये साक्षात्कार में स्पष्ट कहा है कि यदि चुम् बन तगड़ा हो अथवा आपके मसूड़े जख्मी हो,तो चुम्बन लेता है तो असंक्रमित व्यक्ति के मुँह में वायरस निश्चित रूप से पहुँच जाते हैं. यदि छाले,सड़न, सूजन,कट और दरार या कोई सूक्षमतम छिद्र मुँह,जीब, मसूड़ों, टांसिल्स, होठों आदि में हुआ तो हजारों की तादाद में वायरस शरीर में पहुँच जाते है. एक बार भीतर पहुँचने पर रक्त के ग्लूकोज आदि पोषक तत्वों की उपस्थिति में इनकी संख्या निरंतर बढती जाती है. बीमारी के लक्षण प्रकट होने में भले ही चार-पाँच सप्ताह से पांच-दस साल लग जाएं मगर जीत तो एच.आई.वी/एड्स के रोगाणुओं की ही होती है.

चुम्बन पर चुप्पी नहीं साफ-साफ बताइए

नाको अपने अखबारी विज्ञापनों तथा अन्य प्रचार माध्यमों में चुम्बन के विषय में स्पष्ट जानकारी नहीं देता है. चुम्बन के विषय में जानकारी नहीं होने से आम नागरिक ही नहीं वरन उच्च शिक्षित लोग भी चुम्बन को हर स्थिति में निरापद मानते हैं क्योंकि एड्स से संपूर्ण सुरक्षा के लिए कण्डोम का ही जोरदार प्रचार किया जाता है.

नाको ने चुम्बन के विषय में जो भी रवैया अख्तियार कर रखा है, वह अनजाने में किया गया कृत्य नहीं हैं. नाको ने एक कदम और निर्भीकता से इसी दिशा में बढाते हुए चुम्बन के विषय में देश के स्वास्थ्य कार्यक्रमों से जुड़े तीन स्तर के लोगों को अपने ट्रेनिंग माड्यूल्स में तीन अलग अलग तरह के विवरण दिए हैं. एच.आई.वी./एड्स तथा यौन संक्रमित रोगों से बचाव एवं नियंत्रण पर स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं एवं पर्यवेक्षकों हेतु प्रशिक्षण-संदर्शिका के पृष्ठ क्रमांक-१३ में लिखा है कि - *संक्रमित व्यक्ति का आंलिगन अथवा चुम्बन करने से एच.आई.वी. नहीं फैलता.*

यह बात अत्यन्त मायने रखती है कि स्वास्थ्य कार्यकर्ता घर-घर गांव-गांव जाकर अनपढ, नवसाक्षर और साक्षर ग्रामीणों तथा गरीब बस्तियों के लोगों के जीवन्त सम्पर्क में सतत रहते हैं. निश्चित रूप से वे यही बात इनको बताते होंगे, जिनके मुँह में कुपोषण और उपरोक्त तमाम कारणों में से किसी-न-किसी के कारण दरार, छाले, खराख पाए जाने की संभावना सर्वाधिक रहती है. क्या इस बात को नाको के नीति- निर्धारक वरिष्ठ अधिकारीगण नहीं जाते है .

स्वास्थ सेवाओं को विस्तार देने वाली दूसरे स्तर पर आती है परिचारिकाएं (नर्सेस) इनकी प्रशिक्षण-संदर्शिका के पृष्ठ ६ पर चुम्बन के विषय में जो कुछ लिखा है वह कितना दिग्भ्रमित करने वाला है, यह भाषा से ही स्पष्ट है कि- साधारण चूमने से एच.आई.वी. संक्रमण नहीं होता, अधिकांश वैज्ञानिक का यह मानना है कि अधिक समय तक लिए गए चुम्बन से एच.आई.वी. संक्रमण संभव है, क्योंकि इसमे रक्त परस्पर सम्पर्क में ज्यादा रहता है, साधारणत: इसकी संभावना कम ही रहती है.

चूंकि परिचारिकाएं चिकित्सा- शास्त्र की पुस्तकों के संपर्क में रहती है. इसलिए उन्हें गोलमाल शब्दों में बात कही गई है.

चिकित्सकों को चूंकि अंधेरे में नहीं रखा जा सकता है इसलिए उन्हें ट्रेनिग माड्यूल्स (ट्रेनिंग माड्यूल ऑन एच.आई.वी. एण्ड फॉर मेडिकल ऑफिसर्स, नाको, नई-दिल्ली पृष्ठ क्रमांक-७) में लिखा है- " HIV is not transmitted by Dry Kissing" नाको, यूनेस्को, यूनिसेफ और एन.सी.ई.आर.टी. ने शिक्षकों और छात्रों के लिये एक पुस्तक प्रकाशित की है लर्निग ऑफ लाईफ जिसमें चुम्बन के बारे में लिखा है कि- तब तक कोई खतरा नहीं है, जब कि कि ऐसा करने वालों के मुँह से खून न आ रहा हो या उन्हें कोई कट न लगा हो और कोई घाव या खराश न हो.

" Deep Kissing : No risk as long as both the partners are not bleeding in the mouth or have no cuts and wounds or sores"

इसी पुस्तक के पृष्ठ क्रमांक ५७ पर लिखा है -" Oral Sex : Low risk, the risk increases if there are ulcers or cuts in the mouth"

उपरोक्त तमाम वैज्ञानिक तथ्यों तथा देश के भीषण बेरोजगारी, गरीबी और कुपोषण को ध्यान में रखते हुए सार्दी-जुकाम, नशाखोरी, चूने-कत्थे के पान, तम्बाकू सेवन, गुटका, पान-बहार, सुपारी तथा तेज-मिर्च मसालेदार पदार्थ खाने की आदतों एवं गरमागरम चाय काफीपीने की आदतों को ध्यान में रखते हुए मुंह में कट,दरार, छाले,खराश की संभावनाओं की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए और नाको का यह राष्ट्रीय और नैतिक कर्तव्य है कि चुम्बन के विरूद्ध में स्पष्ट जानकारी पहुंचाई जावे.

एक चिकित्सक, चिकित्सा शिक्षक और सामाजिक कार्यकर्ता होने के नाते मेरी दृष्टि में नाको का यह रवैया अत्यन्त खेदजनक और आपराधिक है कि वह तमाम सारी जानकारीयों तो विज्ञापनों आदि के जरिए स्पष्ट रूप से देता है, जिससे एच.आई.वी. संक्रमण नहीं होता है, मगर चुम्बन के मामले में चुप्पी देश के लिये, देश के सामाजिक ढांचे के लिए, नागरिकों के कितनी घातक हो सकती है, यह अकल्पनीय है. मेरी दृष्टि में एच.आई.वी./एड्स के तेज गति से विस्तार के लिए जानबूझकर साधी गई चुप्पी काबड़ा हाथ है, क्योंकि संभोग या यौन-सम्बन्ध के दौरान चुम्बन एक सहज स्वाभाविक और अनिवार्य-सी क्रिया है. यहाँ तक कि बिना यौन संबंध स्थापित किए भी प्यार जताने के लिए अक्सर चुम्बनों का आदान-प्रदान होता है.

भारत देश में हिन्दु और मुस्लिम धर्मावलम्बियों की संख्या ९० प्रतिशत से अधिक है और दोनों और दोनों धर्मो के धर्मगुरू और माता-पिता संयम की शिक्षा देते हैं और व्यभिचार को पाक/नापाक मानते हैं. ऐसी स्थिती में संयम की बजाय कंडोम का जोर-जोर से प्रचार करने पर रोक लगाई जानी चाहिये अथवा नाको को यहबताने का निर्देश दिया जावए कि राष्ट्रीय स्तर और विकसित देशों में यौनजनित संक्रमणों के मामले में कण्डोम की असफलता दर (फैल्युअर रेट) कितनी है.

According to obstetrician Joe S. Mcilhaney Jr., founder of the medical institute for sexual health, not only condoms have a higher failure rate for preventing STDs, but they also lhave a high failure rate for preventing pregnancy. A study by researcher Susan C. Weller found that condoms failed to prevent pregnancy up to 13 percent of the time and failed to protect against AIDS and other STDs 31 percent for the time. Mcilhaney adds that many married couples do not use condoms correctly, so it is unlikely that enexperienced teens could do so (http://soc.enotes.com/sexeducation-article//print)

सुसान सी वेलर ने अपने अध्ययन में पाया कि एड्स आदि रोगों के मामले में कण्डोम की असफलता की दर ३१ प्रतिशत है. ऐसी स्थिती में कंडोम को पूर्णत: निरापद बताना भी पूरी तरह से गलत प्रचार है. यह विकसित और शिक्षित देश की स्थिती है तो हमारे देश में अशिक्षा, गरीबी और नशे के प्रचलन के चलते स्थिति कितनी बदतर होगी, सहज कल्पना की जा सकती है.

यह बताना यदि जरूरी है कि हाथ मिलाने, एक साथ भोजन करने, एक ही घड़े में पानी पीने, एक ही बिस्तर और कपड़े का प्रयोग करने तथा बच्चों के साथ खेलने से यह रोग नहीं फैलता है. मच्छरों या खटमलों के काटने से, हस्तमैथुन से, स्वीमिंग पुल में नहाने से, टेलीफोन करने से भी रोग नहीं फैलता है तो व्यापक जनहित में यह भी बताना जाना चाहिये कि चुम्बन से एड्स फैलता है और कंडोम पुरी तरह निरापद नहीं है, इसकी असफलता की दर अत्यधिक है.

नाको के मार्गदर्शन में कार्यरत दिल्ली स्टेट कन्ट्रोल सोसायटी द्वारा जारी हैण्ड बुक फॉर टीचर्स में समलैंगिकता के विषय में लिखा है कि-" This is a personal preference of individuals and should not be viewed in a negative manner." वास्तविकता यह है कि स्वस्थ व्यक्ति की गुदा में ही लाखों की संख्या में बैक्टीरिया मौजूद रहते हैं वे लिंग के जरिए मूत्र तंत्र और गुर्दो को संक्रमित कर सकते हैं. संक्रमण जानलेवा भी हो सकता है, ऐसी स्थिती में गुदा मैथुन के खतरों को स्पष्ट रूप से जगजाहिर करना चाहिये. हमारे संविधान में आत्महत्या को अपराध माना गया है जबकि वह भी व्यक्तिगत प्राथमिकता का मामला है. रोगकारी गतिविधि के विषय में जनता को चेतावनी देना स्वास्थ्य सेवा से जुड़ी संस्थाओं का प्राथमिक कर्तव्य है न कि उसे व्यक्तिगत मसला बताकर, परोक्ष रूप से सहमति जताना. ऐसी स्थिती में नाको तथा सभी राज्यों की एड्स कन्ट्रोल सोसायटीज को यह निर्देशित किया जाए कि वे चुम्बन, कण्डोम, मुख मैथुन और गुदा मैथुन तथा एच.आई.वी./एड्स के अन्तर्सम्बन्धों को सामान्य भाषा में जन-जन तक पहुँचाए.

यह शर्मनाक, दर्दनाक और अफसोसजनक बात है कि तक्षशिला व नालंदा विश्वविघालयों और सांदीपनि गुरूकुल के इस देश में ज्ञान के मंदिरों यानी विश्वविघालयों में कंडोम वेंडिंग मशीनें लगाई जा रही है. इसी तर्ज पर पुण्य भूमि भारत के बाजारों में, जहाँ माता-बहनें और छोटे-छोटे लड़के-लड़कियाँ घर के छोटे-मोटे सामान खरीदने का काम निपटाते हों, वहाँ सरेआम कंडोम वेडिंग मशीने लगाने का विचार ही देश की सांस्कृतिक, नैतिक और सामाजिक ढाचे को तहस-नहस करने जैसा कृत्य है.

यदि नाको इस वैज्ञानिक तथ्य को प्रचारित करे कि डीप किसिंग और वेट किसिंग से एड्स का संक्रमण संभव है तथा कण्डोम की फैल्युअर रेट काफी ज्यादा है तो आम जनता एड्स जैसे भयावह रोग से बचने के लिये संयम के प्रति ज्यादा आस्थावान हो जाएगी.

लेखक-चिकित्सक है एवं एम.जी.एम. मेडिकल कॉलेज , इन्दौर में फिजियोलॉजी विभाग से सम्बद्ध है.